देश में 543 निर्वाचित सांसद हैं, इनमें 321 ग्रामीण क्षेत्र से चुनकर आते हैं। 138 सांसद ऐसे चुनाव क्षेत्र से निर्वाचित होते हैं, जिनमें शहरी और ग्रामीण अंचल से मिले-जुले क्षेत्र आते हैं और केवल 84 सांसद शुद्ध शहरी क्षेत्र से निर्वाचित होते हैं। इसका अर्थ है, सांसदों की अधिकांश संख्या ग्रामीण क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती है। वह ग्रामीण क्षेत्र आजादी के 60 साल के बाद भी बेकारी और भुखमरी से त्रस्त है और शहर दिन-प्रतिदिन अधिकाधिक गुलजार होते जा रहे हैं। क्या यह लोकतंत्र का रूप है?

वस्तुतः स्वतंत्र भारत में राजशाही चल रही है। देश में सभी पार्टियां राजशाही का अवलंबन किए हुए हैं। नेहरू से लेकर श्रीमती सोनिया गांधी तक सभी शासक अपनी-अपनी मनमानी चलाते रहे हैं। उनका केन्द्र हमेशा दिल्ली या प्रदेश की राजधानियां रही हैं। अतः देश का सारा ऐश्वर्य इन राजधानियों में समाता गया है। सांसद भी शासकों के अनुसार ही आचरण करते हैं। सभी सांसद दिल्ली में और विधायक शहरों में अपने निवास-स्थान बना रहे हैं। अपनी संतान को शहरों में पब्लिक स्कूल में पढ़ा रहे हैं। उन्हें अपने विधायकों के सहयोग से निर्वाचन क्षेत्र के नागरिकों की चिंता करनी चाहिए। इसी के लिए उनको वेतन और भत्ता मिलता है। लेकिन उन्हें यह बात समझाने का आज तक किसी भी पार्टी के नेता ने प्रयास नहीं किया है। अन्यथा, देश में गरीबी और भुखमरी की दुर्दशा उत्पन्न ही नहीं होती। सभी नागरिक स्वावलंबी, कर्तृत्ववान और प्रतिभाशाली सिद्ध होते। 60 साल में भारत संसार का अनुकरणीय लोकतंत्र बन जाता। इस दिशा में सोचने के स्थान पर सभी नेता ऐन चुनाव के मौके पर प्रचार-प्रसार के माध्यम से लोगों को गुमराह कर रहे हैं। भीड़ जुटाने के लिए अब तो अभिनेताओं का भी उपयोग किया जा रहा है और पूंजीपतियों की थैलियाँ चुनाव के काम में खुलकर काम आ रही हैं। वास्तविक यह लोकतंत्र का उपहास है। इस स्थिति के लिए सभी दलों के नेता जिम्मेदार हैं।

राजनेतागण देश में एकात्मता के स्थान पर वोट पाने की राजनीति के लिए कहीं जाति के, कहीं मजहब के, कहीं क्षेत्रीयता के और कहीं भाषा के नाम पर लोगों को विखण्डित कर रहे हैं। अंग्रेजी शासन के पूर्व हमारे यहां मुस्लिम आक्रमणकारियों का शासन था। उस समय देश में हिन्दू-मुस्लिम भावना थी। किन्तु अब समय बदल गया है। सभी लोग भारत के नागरिक बने हैं। अब हिन्दू-मुस्लिम के रूप में समाज को बांटना गलत है। हम सभी लोग भारतीय हैं। अपने को भारतीय कहने में किसी को भी ऐतराज नहीं है। इसी भावना को वास्तविक आज महत्व दिया जाना चाहिए। इसी कारण, ''एकात्म मानव दर्शन'' को प्रचलित करने की आवश्यकता है। उसके बिना देश को अभिन्न बनाए रखना असंभव है।

शुभाकांक्षी -

नाना देशमुख

(नाना देशमुख)

दिनांक : 08/01/2007

प्रिय युवा बंधुओं और बहनों,

गांधी जी ने 05 अक्तूबर, 1945 को नेहरू को पत्र लिखा था।

05 अक्तूबर, 1945

चि. जवाहरलाल,

तुमको लिखने को तो कई दिनों से इरादा किया था, लेकिन आज ही उसका अमल कर सकता हूँ। अंग्रेजी में लिखूं या हिन्दुस्तानी में यह भी मेरे सामने सवाल रहा था। आखिर में मैंने हिन्दुस्तानी में ही लिखने का पसंद किया।

पहली बात तो हमारे बीच में जो बड़ा मतभेद हुआ है उसकी है। अगर वह भेद सचमुच है तो लोगों को भी जानना चाहिए। क्योंकि उनको अंधेरे में रखने से हमारा स्वराज का काम रूकता है। मैंने कहा है कि 'हिन्द स्वराज' में मैंने लिखा है उस राज्य पद्धति पर मैं बिलकुल कायम हूँ। यह सिर्फ कहने की बात नहीं है, लेकिन जो चीज मैंने सन् 1909 में लिखी है उसी चीज का सत्य मैंने अनुभव से आज तक पाया है। आखिर में एक ही उसे मानने वाला रह जाऊं, उसका मुझको जरा-सा भी दुःख न होगा। क्योंकि मैं जैसे सत्य पाता हूँ उसका मैं साक्षी बन सकता हूँ। 'हिन्द स्वराज' मेरे सामने नहीं है। अच्छा है कि मैं उसी चित्र को आज अपनी भाषा में खेंचु। पीछे वह चित्र सन् 1909 जैसा ही है या नहीं, उसकी मुझे दरकार न रहेगी, न तुम्हें रहनी चाहिए। आखिर में तो मैंने पहले क्या कहा था, उसे सिद्ध करना नहीं है, आज मैं क्या कहता हूँ वही जानना आवश्यक है। मैं यह मानता हूँ कि अगर हिन्दुस्तान को कल देहातों में ही रहना होगा, झोपड़ियों में, महलों में नहीं। कई अरब आदमी शहरों और महलों में सुख से और शांति से कभी रह नहीं सकते, न एक-दूसरों का खून करके - मायने हिंसा से, न झूठ से - यानी असत्य से। सिवाय इस जोड़ी के (यानी सत्य और अहिंसा) मनुष्य जाति का नाश ही है, उसमें मुझे जरा-सा भी शक नहीं है। उस सत्य और अहिंसा का दर्शन केवल देहातों की सादगी में ही कर सकते हैं। वह सादगी चर्खा में और चर्खा में जो चीज भरी है उसी पर निर्भर है। मुझे कोई डर नहीं है कि दुनिया उल्टी ओर ही जा रही दिखती है। यों तो पतंगा जब अपने नाश की ओर जाता है तब सबसे ज्यादा चक्कर खाता है और चक्कर खाते-खाते जल जाता है। हो सकता है कि हिन्दुस्तान इस पतंगे के चक्कर में से न बच सके। मेरा फर्ज है कि आखिर दम तक उसमें से उसे और उसके मारफत जगत को बचाने की कोशिश करूं। मेरे कहने का निचोड़ यह है कि मनुष्य जीवन के लिए जितनी जरूरत की चीज